International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp. 202-210

हरिशंकर परसाई का लेखन–एक सर्वेक्षण

डॉ. मोहन लाल शर्मा*

प्रस्तावना

व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय

स्वातन्त्र्योत्तर युग में व्यंग्य विधा को सही शैली में स्थापना देने में जिन व्यंग्यकारों की महत्ता उल्लेखनीय है, उनमें हरिशंकर परसाई का नाम बड़े गर्व के साथ लिया जाता है। विधा के रूप में व्यंग्य को स्थापना देने वाले रचनाकार परसाई के जीवन परिचय के अन्तर्गत ही उनकी समग्र कठिनाइयाँ तथा संघर्ष उभर कर हमारे सामने आते हैं।

परसाई जी का जन्म 22 अगस्त, 1924 में जमानी गांव में हुआ इनके दो भाई व तीन बहिनों सहित बड़ा परिवार है। आजीवन अविवाहित रहने वाले परसाई जी का जीवन बड़ा संघर्षमय रहा है। 18 वर्ष की आयु में जंगल विभाग (इटारसी के पास) किसी गांव में नौकरी की थी वहाँ लेखनी के चितेरे को चौन नहीं मिला तथा खण्डवा में 6 महीने के लिए अध्यापन कार्य किया। उसे छोड़कर सन् (1941–43) में दो वर्ष के लिए जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग कॉलेज में शिक्षण कार्य किया। 1943 से ही जबलपुर में ही मॉडल हाई स्कूल में अध्यापन का कार्य किया। 1952 में स्तीफा। उसके बाद सन् 1953 से 1957 तक प्राईवेट स्कूलों में पढ़ाया। फिर नौकरी को नमस्कार। अबाध गति से बढ़ते हुए लेखक ने एक बार फिर से नागपुर से एम.ए. तथा सन् 1958 में जबलपुर विश्वविद्यालय से डी. लिट् की उपाधि प्राप्त की। अध्ययन से परिपूर्ण होने के बाद अपनी लेखनी की धार को व्यंग्य के सागर में खुलकर चलाना प्रारम्भ कर दी। जिसके फलस्वरूप सन् 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1962 में विश्वशान्ति सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के एक सदस्य के नाते रूस की यात्रा।

जीवन की एक सुदूर यात्रा करने के बाद हरिशंकर जी ने आजीवन अविवाहित रहकर व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में हिन्दी साहित्य जगत में एक भूचाल मचा दिया, संवेदन की विलक्षण दुनियाँ और सम्प्रेषण की अनूठी भंगिमा द्वारा परसाई ने स्वस्थ और प्रतिबद्ध व्यंग्यकार की तमाम शर्तों को पूरा किया। उनके लेखन में निरालापन है और कबीरपन भी। उनके प्रश्नों में हमारी बौद्धिक चेतना को परिवर्तनोन्मुख करने की क्षमता है और उनका प्रहार विशिष्ट भावनात्मक ईमानदारी का सुपरिणाम है।

जबलपुर से प्रकाशित होने वाले पत्र 'प्रहरी' में ''उदार'' नाम से अपना लेखन प्रारम्भ किया था। बाद में परसाई जी पत्रकारिता के स्तम्भ लेखक के रूप में जुड़े ही रहे 'और अन्त में'' (कल्पना), कबिरा खड़ा बाजार में (सारिका), मैं कहता आँखिन की देखी (माया), माटी कहें कुम्हार से (हिन्दी करंट), सुनो भाई साधो (नई दुनियाँ), पांचवा कालम (नई कहानियाँ), जैसे स्तम्भों में परसाई का सघन व्यंग्य विस्तृत होता रहा।''

परसाई जी का व्यंग्य लेखन बैठे–ठालों का विनोद नहीं है, भौतिक क्रान्ति का खुला घोषणा पत्र है। इनका व्यंग्य लेखन का रिश्ता विविध विकृतियों के चक्रव्यूह में फँसे साधारण आदमी के साथ है। इस रिश्ते का विस्फोट उनके सभी व्यंग्य संकलनों में एक ही मुद्रा, एक ही भंगिमा, एक ही सरोकार के साथ विद्यमान है।

* भाषा–संपादक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।

वास्तव में हिन्दी व्यंग्य के क्षेत्र में सबसे ऊँचा तथा यथार्थ का सत्य के रूप में प्रकट करने का काम केवल परसाई ने ही किया है। तर्क से लगातार जुड़े रहकर उन्होंने व्यंग्य की शक्ति को उपस्थित किया है। अपने व्यक्तित्व को परसाई जी ने अपनी रचनाओं में प्रकट करने की सफलता हासिल की है। स्वच्छ रचना तथा प्रत्येक विकृति को भलिभांति रूप में प्रदर्शित करने की अद्‌भुत शक्ति इनकी लेखनी में हैं।

कृतित्व के क्षेत्र में परसाई ने व्यंग्य विधा को निबन्ध, कहानी तथा उपन्यास के रूप में प्रदर्शित किया है। उनके अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जो उनकी व्यंग्य विधा की उत्कृष्टता पहचानने के लिए काफी है।

सृजन के सरोकार एवं विधा वैविध्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी व्यंग्य निबन्ध को कुलीन बनाने का सबसे अधिक श्रेय हरिशंकर परसाई को ही है। परसाई जी ने अपनी लेखनी से व्यंग्य का परिष्कार ही नहीं किया बल्कि उसे अपने पैरों पर खड़े होने का बल दिया। हरिशंकर जी परसाई परिवेश को बदल डालने के परामर्श दाता हैं, जो टूटने लायक है उसे तोड़ डालने के कायल है। स्वयं परसाई जी ने स्वीकार किया– ''मैं सुधार के लिए नहीं, बदलने के लिए लिखना चाहता हूँ यानि कोशिश करता हूँ। चेतना में हलचल हो जाये, कोई विसंगति नजर के सामने आ जाये, इतना काफी है।''

परसाई जी ने लगातार बिगड़ते सामाजिक समसामयिक वातावरण और उसकी विघटनशील मान्यताओं को भंग कर नयी मान्यताओं को स्थापित करने का कार्य व्यंग्य के माध्यम से अपनी रचनाओं में किया है। उनकी व्यंग्य रचनाओं ने एक नये ज्ञानवादी पाठक वर्ग का निर्माण किया है जो रचनाओं को पढ़कर केवल रंजित ही नहीं होता, उसका चेतन या अवचेतन सब कुछ यह सोचने में व्यस्त हो जाता है कि परसाई जी ने सामाजिक अहम् के किस पक्ष का विस्फोट किया है। फेमिली प्लानिंग, इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर, भोलाराम का जीव जैसी रचनाओं में समाज और राजनीति में व्याप्त विद्रूपता के जिन पक्षों का उद्‌घाटन परसाई जी ने किया है उसे देखने की लोगों में शक्ति नहीं है इसलिए उसे देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। परसाई जी ने समाज में व्याप्त सड़ी गली रूढ़ियों के विरुद्ध अपनी आत्मा की आवाज को चुना है। यही उनकी विशिष्टता है कि आत्मा की आवाज समाज की विकृतियों को उजागर करने में तथा उन पर विजय पाने की शक्ति है। तभी वह अपनी आँखें बन्द नहीं कर सकते और खण्डनात्मक कार्रवाई करने के लिए ही अपनी व्यंग्य रचनाओं का निर्माण करते हैं। अपनी निजी स्वस्थ जीवन दृष्टि के प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ परसाई जी ने स्वातंर्त्योत्तर वातावरण की असंगतियों को शमन करने का कार्य साहस के साथ व्यंग्य के माध्यम से किया है। यह सत्य है कि समसामयिक और ज्वलन्त समस्याओं और जीवन के विविध अंगों की विषमताओं को सूक्ष्मता के साथ पकड़ने के क्रम में इन्होंने कथ्य में सामयिकता एवं विशिष्ट संदर्भ का बोलबाला हो गया है। 'कल्पना' के लिए और अन्त में 'सारिका' के लिए श्कबीरा खड़ा बाजार मेंश और 'जनयुग' के लिए 'चाणक्य' के नाम से परसाई जी में सामयिक स्तम्भ की आदत ने परसाई जी में सामयिक महत्व की रचनाएँ प्रस्तुत करने की बुरी आदत डाल दी है। स्वयं परसाई जी ने स्वीकार किया है–''अवसर को पकड़ना बड़ी भारी विधा है।''

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी ने कहा है–''कि इस भारी विधा के परसाई भारी पंडित हैं। उन्होंने नई–नई समस्याओं और घटनाओं को विषय बनाकर अपनी रचनाओं का प्रस्तुतीकरण किया है। दीवाली, चीनी, आक्रमण, ब्लॉक आडर, मध्यावधि चुनाव, परिवार नियोजन और चन्द्र यात्रा से लेकर प्रेम पुजारी फिल्म तक पर परसाई जी ने अपनी कलम को घिसा है। इस क्रम में परसाई जी की व्यंग्य शैली और चेतना को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।''

परसाई जी ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के नंगे सच को 'प्राईवेट कॉलेज का घोषणा–पत्र' में इस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है–''यह कॉलेज हमारे फार्म की शाखा है। इसलिए इसके प्रिंसपल का दर्जा हमारी दुकानं के हेड मुनीम के बराबर होगा और प्रोफेसर लोग मुनीम माने जायेंगे। प्रिन्सपल को प्रतिदिन हमें दुकान पर 'जय राम जी की' करने आना पड़ेगा। जिस दिन वह न आयेगा, उस दिन वेतन काट लिया जायेगा।''

परसाई जी ने नई–नई समस्याएं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय से लेकर रोजमर्रा तथा समाज और राजनीति में व्याप्त सड़ांध और उसके गोप के प्रयास को एक साथ अभिव्यक्ति दी है। ''सदाचार का ताबीज'', ''दस दिन का अनशन'', ''जैसे उनके दिन फिरे'', ''बैताल की सत्ताइसवीं कथा'' जैसी रचनाओं में सुधारवाद के नाम पर छिपे हुए छल को परसाई ने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से प्रकट किया है। समसामयिक जीवन की विभिन्नं विषमताओं को सूक्ष्मता के साथ पकड़ने के क्रम में इनका कथ्य समसामयिक एवं विशिष्ट सन्दर्भ युक्त है। **''विकलांग श्रद्धा का दौर** में शामिल व्यंग्य अपनी कथात्मक सहजता और पैनेपन में ऐसे अविस्मरणीय हैं कि एक बार पढ़कर इनका मौखिक पाठ किया जा सकें। आये दिन इर्द–गिर्द घट रही सामान्य सी घटनाओं से असामान्य समय सन्दर्भों और व्यापक मानव मूल्यों की उद्‌भावना न सिर्फ रचनाकार को मूल्यवान बनाती हैं, बल्कि व्यंग्य विधा को नई ऊंचाइयाँ सौंपती हैं।''

'सुदामा के चावल' में सुदामा को वैभव मैत्री के कारण नहीं कर्मचारियों की घूसखोरी का रहस्य गोपनीय रखने के लिए दिया जाता है। लंका विजय के बाद में वानर सीता के लिए परित्याग के बाद सीता सहायक कोष खोलकर उदार जनता का चन्दा खा जाते हैं। इन्सपेक्टर मातादीन चाँद पर जाकर वहां की कर्तव्य परायण पुलिस को एफ. आई. आर. बदलने और गवाहों को तोड़ने की अनोखी सीख देते हैं। 'रामसिंह की ट्रेनिंग' का दर्शन–सार यह है कि इस भ्रष्ट तंत्र में कोई व्यक्ति भ्रष्ट हुए बिना जीवित नहीं रह सकता।

इनकी प्रत्येक रचनाओं के भीतर सतत् ज्वलनशीलता है जो साहित्य और राजनीति के मठों, भ्रष्टाचार और विघटन केन्द्रों और भीड़तन्त्र से घिरी लोकशाही के समस्त समाराहों की बेबाक अभिव्यक्ति एक प्रयोजनिक कशिश परसाई जी में मौजूद है। वे मानते हैं कि व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार है, जीवन की आलोचना है, जीवन के पाखण्डों का पर्दाफाश है। उनके सामने सुधार के लिए नहीं, बदलने के लिए लिखने का संकल्प है। वे व्यंग्य को गम्भीरता से लेते हैं और आशा करते हैं कि और लोग भी ऐसा ही करें।

प्रेम जनमेजय के अनुसार–''इस व्यंग्यकार ने सही समय में व्यंग्य की आवश्यकता को अनुभव किया और अपने सही दिशापूर्ण लेखन के द्वारा उसे इतना सशक्त बना दिया कि व्यंग्य का आज साहित्य की सभी विधाओं में क्षिप्रगति से प्रवेश हो रहा है।''

परसाई जी ने भारतीय जीवन की गरीबी को बालों के माध्यम से किस प्रकार व्यंजित किया है– ''पर हम क्या दें? महायुद्ध की छाया में बढ़े हम लोगय हम गरीबी और अभाव में पले लोग केवल जिजीविषा खाकर जिये हम लोग– हमारी पीढ़ी के बाल तो जन्म से ही सफेद हैं। हमारे पास क्या है।''

परसाई जी के व्यक्तित्व पर और कृतित्व पर कबीर औघड़ व्यक्तित्व और क्रांतिकारी दृष्टि का विशेष प्रभाव पड़ा है अतः रामझरोखे बैठकर आपने भी सबका मुजरा लेने की चेष्टा की है। सुनो भाई साधो, कबीर की ही वाणी जिसमें खरापन है, उसमें प्रस्तुत युगीन जीवन पर मार्मिक प्रहार है। जिस प्रकार कबीर के व्यंग्यों में तिलमिलाहट पैदा करने वाली शक्ति है वही व्यंग्य तीक्ष्णता आपकी रचनाओं में देखी जा सकती है। बिना लाग लपेट के ढेठ शब्दो में प्रकट कर देना ही परसाई जी के निबन्धों की विशेषता है।

परसाई के लेखन में विविधता ही भरी पड़ी है आदि से लेकर अब तक के लेखन में परसाई जी के निबन्ध संग्रहों में निम्नलिखित विशेषताएं मौजूद हैं–

- **लघुता :** व्यंग्य निबन्धों का प्रथम गुण है। यद्यपि निबन्धों का लम्बा होना अवगुण नहीं है फिर भी लघुता में एक विशेष आकर्षण रहता है। उच्छिन्न चिन्तन– व्यंग्य निबन्धों में व्यक्तिवादिता अधिक होती है। इसलिए निबन्धकार स्वछन्दतापूर्वक लिखता है। परसाई जी खड़ी– सुपारी की बात लेकर सांसारिक आडम्बरों, छल–कपट, थोथी पोंगापंथी, रूढिवादिता, मुल्ला, मन्दिर, मस्जिद, ब्राह्मण आदि तथा भारतीय संस्कृति की झलक दिखाते हुए पुनरू वहीं खड़ी– सुपारी पर जाकर निबन्ध को समाप्त करते हैं। परसाई की स्वछन्दता का एक नमूना देखिए ''भारतीय जनता पार्टी का सधा हुआ नाटक बहुत मनोरंजक है। देखकर दिल खुश हो जाता है। अगर ये नाटक टिकट से खेले तो बहुत पैसे मिलें तथा चुनाव के लिए पैसा इकट्ठा हो।''

इसी तरह ''डॉक्टर फारुक अब्दुल्ला को एक बात समझ लेनी चाहिए कि शेरे कश्मीर का बेटा भी शेरे कश्मीर होगा यह जरूरी नहीं। ऐसा तो जानवरों में होता है कि शेर का बेटा शेर होता है और कुत्ते का बेटा कुत्ता।''

- **व्यंग्य–विनोद**– व्यंग्य–विनोद तो परसाई जी के निबन्धों का जीवन है। बिना व्यंग्य के उनके निबन्ध संग्रह ऐसे लगते हैं, जैसे बिना हथियार के फौजी लड़ाई के मैदान में हो। सामाजिक विसंगतियाँ चाहे राजनैतिक अवसरवादिता हो, चाहे आर्थिक विषमता या सांस्कृतिक विखण्डता या हो धार्मिक पाखण्ड। परसाई जी ने सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी को चलाया है। तथा एक सच्चे पथप्रदर्शक का कार्य किया है।

राजनीति की तस्वीर देखिए–''राजनैतिक अवसरवादिता की पूंगी जब इसी फेफड़े की साँस से बजती है, जिसमें सत्ता का दम हो तब मतवाद सिद्धान्त और आइडियालॉजी का कोई उपयोग नहीं रहता है।''

इसी तरह राजनीति की खुली पोल तथा अनैतिकता देखिए– ष्काश्मीर के वे समाज कल्याण अधिकारी समाज के पीड़ितों का कल्याण चरस से करते रहे होंगे। वे कई वर्षों से चरस, स्मगल कर रहे होंगे। भारत से भी तो श्रमश और श्ठर्रेश की बोतलें इस्लामी हुकूमत की मदद के लिए पाकिस्तान श्स्मगलश होती हैं। दो देशों में सबसे मजबूत दोस्ती 'स्मगलिंग' से ही होती है। तस्कर हमारे सबसे अच्छे मैत्री प्रतिनिधि हैं।''

- **नाटकीयता**–कथोपकथन एवं बातचीत का स्वाभाविक आनन्द परसाई जी के प्रायरू सभी निबन्ध संग्रहों में सत्य का यथार्थ चित्रण किया है। दैनिक जीवन से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय तक की व्यापक सामग्री को संवादों में इस तरह व्यक्त करते हैं जिससे उनकी नाटकीयता में चार चाँद लग जाते हैं। प्रत्येक व्यंग्य निबन्ध में सामयिक विशेषताएँ मौजूद हैं। संवादों में नाटकीयता के साथ–साथ कथन वक्रता भी मौजूद है–''एक दोस्त पान के ठेले के पास चौराहे पर खड़े थे– बोला एक सिगरेट तो पिलाओगे ना। मैंने कहा–मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया ? वह तपाक से बोला– पिलाना तो नहीं छोड़ा।''

  ''साब, उसे देखो कैसी मटकती है।''

  ''अरे, मगर इस सामने वाली को तो देख। दो बार पूरी रोटी खा ले तो पूरी हो जाये।''

  ''मगर साब, सुना है, तहसीलदार साब भी तबियत फेंक देते हैं।''

  ''अरे, तो 'थ्रू' प्रापर चेनल! सरकारी नियम हम थोड़े ही तोड़ेंगें''

ऐसे ही न जाने कितने उदाहरण हम देख सकते हैं जिसमें परसाई की नाटकीयता उभर कर सामने आती है।

- **कहावतों और मुहावरों का प्रयोग :** जैसे ही अवसर मिलता है वह कथन में रोचकता पैदा करने के लिए उपयुक्त कहावतों, मुहावरों का प्रयोग करते हैं। समरथ को दोष नहीं लगता। 'कुछ लोगों के सिर पर जातीय भूत सवार रहते हैं।' 'करुणा का पांव बनना, आसमाँ एक घटा बरसे तो घर दिन भर।' कई जगह अंग्रेजी की भी कहावतों की भरमार है जैसे–''लुक बिफोर यू लीव, ए मैन इज नोन बाई द कंपनी ही कीप्स ब्लड इंज थिकर दैन वाटर, टाइम इज मनी।''

वास्तव में परसाई जी ने निबन्धों में विषयानुकूल सामान्य चलती भाषा का ही प्रयोग किया है। न तो उनमें पूर्णतया संस्कृत की तत्समता मिलेगी न उनमें उर्दू–फारसी–अरबी शब्दों की भरमार ही और न ही अंग्रेजीयत की अधिकता। उसे रोचक सुलभ और साधारण बनाने के लिए इन सभी से कुछ न कुछ लिया है। वाक्य छोटे सरल हास्य, रसपूर्ण व्यंग्य–विनोद और साधारण प्रस्तुत होने वाली भाषा में है तथा शैली प्रसादपूर्ण है। व्यंग्य शैली के कारण ही इन साधारण सी बात पर लिखे गये निबन्ध भी आत्मपरकता के कारण आकर्षण तथा रोचकता की झलक देते हैं।

परसाई जी बड़ी कुशलता के साथ उत्तरोत्तर तेजी से विकृत हो रहे हमारे जीवन और समाज का सच्चा और यथार्थ चित्र अपने निबन्धों के माध्यम से इस तरह का चित्र प्रस्तुत करते हैं कि पाठक तिलमिला उठता है। हास्य और व्यंग्य की पारम्परिक वैचारिकता के स्थान पर नवीन परिवेश और विद्रूपताओं को अपने कथ्य का आधार बनाया है।

डॉ. भगवान सिंह ने उन्हें स्वतंत्र भारत के सबसे सशक्त व्यंग्यकार की संज्ञा दी है। कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से व्यंग्य की तल्खी और चिनगारियों को परसाई जी ने अभिव्यक्ति दी है।

डॉ. कृष्णकुमार सिन्हा ने लिखा है कि– ''परसाई जी सीधी–सादी भाषाओं में वक्रता उत्पन्न करना असाधारण साधन की अपेक्षा रखती है, और इस दिशा में परसाई अद्वितीय है। उनका हर शब्द व्यंग्य का पुट लिए रहता है।''

विधा वैविध्य

- **निबन्ध**–परसाई जी ने अपने लिए विधा के रूप में प्रायरू निबन्ध या कहानी को चुना है। निबन्ध उनके लिए और भी ज्यादा अनुकूल रहा है। जैसा हम सभी जानते हैं कि आचार्य शुक्ल ने निबन्ध के लिए कहा था– यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक सम्भव होता है।

परसाई लेखन में साहित्य की यह विधा अत्यधिक फली फूली है। कितनी अच्छी बात है कि जो गद्य विधा लेखकों के लिए कसौटी है, वही उनकी प्रकृति के अनुकूल है। शुक्ल जी "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'' दोहराते थे। जीवन भर इस कसौटी में खरे उतरने का संघर्ष वे झेलते रहे। क्रोध, करुणा श्रद्धा और भक्ति जैसी मानवीय प्रवृत्तियों को खोजते हुए वे निरपेक्ष पाण्डित्य से जुझे। बालमुकुन्द गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, द्विवेदी की निबन्ध परम्परा को निभाने की जिम्मेदारी परसाई जी ने ली है।

- **कहानियाँ– भारत के जीवन**–यथार्थ के जटिलतम रूपों की पूरी गहराई और अत्यन्त सहजता के साथ भरपूर कलात्मक अभिव्यक्ति जिन लेखकों ने की है उनमें परसाईजी का नाम सर्वप्रमुख है।

इन्होंने तादाद में कहानियाँ लिखी। परसाई जी की कहानियाँ का महत्व इसी तथ्य से समझा जा सकता है कि हिन्दी कथा साहित्य में घनघोर रूमानियत के दौर में वहीं अकेले ऐसे कहानीकार नजर आते हैं, जिन पर इस रूमानियत का हल्का सा भी असर नहीं दिखायी देता। इसके विपरीत वे इस रुमानियत पर अपने तीखे व्यंग्य प्रहार किये हैं।

''परसाई जी कथा साहित्य का कितना युगान्तकारी महत्व है, इस बात का पता इस तथ्य से चलता है कि नयी कहानी–धारा के दोनों चोटी के कहानीकारों भीष्म साहनी और अमरकान्त की सफलता का रहस्य भी बहुत कुछ व्यंग्य ही है। अन्य कथाकारों की अपेक्षा परसाई जी की अधिक सफलता और उच्चतर प्रतिष्ठा की एक वजह यह भी है कि व्यंग्य उनके गद्य में एक सहायक गौण तत्व के रूप में नहीं, बल्कि उनके यथार्थवाद दृ ष्टिकोण और कलात्मक पद्धति में घुला मिला उसके मूलाधार के रूप में आता है।''

- **उपन्यास**–कहानीकार का कैनवस जब बहुत फैलने लगता है तो प्रायरू वह उपन्यास में उसे समेटता है। उपन्यास, परसाई जी ने भी लिखे हैं। लेकिन जब कैनवस असाधारण विस्तार ग्रहण करने लगे तब शायद इस विराट व्यापकता की वजह से ही वे उपन्यास अधिक नहीं लिख सके। उपन्यास श्रानी नागफनी की कहानीश, लिखकर लेखक ने अपने कैनवास को समेटने का प्रयास भी किया है। परन्तु व्यापकता के कारण केवल यही लघु उपन्यास लिख पाये हैं।

रानी नागफनी की कहानी (1961) का प्रकाशन हिन्दी व्यंग्य उपन्यासों के इतिहास की उल्लेखनीय घटना है।

''इसलिये नहीं कि यह परसाई की अकेली व्यंग्य औपन्यासिक रचना है अपितु इसलिए कि इस उपन्यास में परसाई ने समाज, शिक्षा, प्रशासन और राजनीति में व्याप्त अंतर्विरोधों को गहराई से नंगा किया है।

सनसनाते सपने की अपेक्षा रानी नागफनी की कहानी के फैन्टेसी अधिक काल्पनिक है लेकिन परसाई के गहरे सामाजिक बोध ने इस व्यंग्य उपन्यास को सामंती कथा के बीच भी समकालीन परिवेश का दर्पण बना दिया है। जिस सादगी के साथ परसाई ने अस्तभान मुफतलाल, नागफनी और करेलामुखी के द्वारा इस फिल्मोचित प्रेमकथा में आधुनिक समाज के विविध अंगो पर प्रहार किया है, उसका एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। शिक्षा व्यवस्था और उसमें अध्यापक की स्थिति पर परसाई जी की चोट।''

''अध्यापकों का वेतन और कम करना चाहिए तथा जिन्हें कहीं और नौकरी न मिले उन्हीं को अध्यापक बनाना चाहिए। जब सब जगह अयोग्य ठहराया गया आदमी अध्यापक बनेगा और उसे वेतन भी बहुत कम मिलेगा तो, वह अपने काम को सेवा और त्याग की भावना से करेगा और शिक्षा का स्तर बढ़ जाएगा।'' 'रानी नागफनी की कहानी' आदि से अन्त तक हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य का सक्षम हथियार है। इस उपन्यास में कथानक के रोचक निर्वाह से लेकर व्यंग्य की तीखी धार की अभियोजना में परसाई जी ने परिश्रम किया है।

- **संस्मरण**–संस्मरण में समूचे जीवन का चित्रण न होकर किसी एक या अधिक घटनाओं का रोचक और चित्रात्मक वर्णन होता है। समसामयिक जीवन सन्दर्भों से भी वह जुड़ जाता है।

''संस्मरण तभी सजीव और सामयिक बन पाते हैं जब घटनाऐं लेखक के व्यक्तित्व में रखकर आत्मिक शैली में प्रस्तुत होती है। इसमें अनुभव किया हुआ तथा परखा हुआ तथ्य उभर कर पाठक को रंजित करता है।''

परसाई के संस्मरणों में मुख्य रूप से यथा मुक्तिबोध : 'गप्पियों का देश', 'ओले' 'मजा नहीं आया' कृष्णामुरारी का विश्व तिरंगा प्यार, भारत सेवक की सेवा–जैसी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। एक उदाहरण देखिए–

''मुक्तिबोध हमेशा ही घोर आर्थिक संकट में रहते थे। अभावों का ओर–छोर नहीं था। कर्ज से लदे रहते थे। पैसा चाहते थे, पर पैसे को ठुकराते थे। पैसे लिए कभी कोई विश्वास के प्रतिकूल नहीं किया। अचरज होता था कि जिसे पैसे – पैसे की तंगी है, वह रूपयों का मोह बिना खटक के कैसे छोड देता है।''

परसाई जी अक्षर अपनी आत्मा के द्वारा उत्पीड़ित शब्दों और अभिव्यक्ति को अपने लेखन का विषय बनाते हैं और संस्मरण भी आत्मकथा का ही एक अंग है। पाखण्ड का अध्यात्म'' में संकलित निबन्ध" प्रेमचन्द की असलियत उनके संस्मरण का सर्वोत्कृष्ट निबन्ध कहा जा सकता है–जिसमें जैनेन्द्र कुमार का परिचय करवाते हैं–

''अब कह सकते है कि देख लो, पहचान लो, समझ लो, ये है वयोवृद्ध लेखक जैनेन्द्र कुमार जो प्रेमचन्द के बारे में लिख और बोल रहे हैं। सुनो पढ़ो वो क्या कहते हैं। वे कहते हैं कि समाज में न कोई शिकारी है, न शिकार, सभी शिकारी भी है और शिकार भी। सबहि नचावत राम गौसाईश इसलिए शोषण से मुक्ति का संघर्ष व्यर्थ है।''

परसाई जी ने अनेक ऐसे निबन्धों के अन्तर्गत अपने विचारों को संस्मरण का रूप प्रदान करते घटनाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है– ऊंची जातियों के संरक्षण नामक निबन्ध में देखिए–''परसों यहां एक रेल दुर्घटना हुई। दो गाडियाँ टकरा गयी। दोनों के ड्राइवर हरिजन थे और शराब पिये हुए थे। बताइये भला ऐसा करते हैं ये लोग। मैंने कहा शराब पीकर तो ब्राह्मण भी गाड़ी चलाते हैं। मैं जानता हूँ। आप भी जानते हैं। नियम है कि जब ड्राइवर इंजिन पर जाने लगता है तब उस की साँस की परीक्षा की जाती है कि इसने अल्कोहल तो नहीं लिया है। ऐसी परीक्षा गाड़ी छोड़ने पर होनी चाहिए। यह नहीं होता।''

परसाई जी ने आज के नेताओं को दो मुँह की धम्मी की सी प्रवृत्ति को भी रेखाचित्र में कसने का प्रयास किया है। व्यंग्य के क्षेत्र में वैसे ही रेखाओं का अत्यधिक महत्व होता है। क्योंकि जितनी भी रचनाएँ व्यंग्य से सम्बन्धित होती है उनके प्रथम कँवर पर ही चित्रों के माध्यम से उस पुस्तक के अन्दर की सामग्री का पता लग जाता है। पृष्ठों के ऊपर ऐसी मुद्राएँ अंकित की जाती है जिससे एक उपहास की स्थिति का आभास होता है। इससे ही सच्चे व्यंग्यकार की रेखाचित्र रूपी विधा का अन्दाज होता है। एक सशक्त व्यंग्यकार ही रेखाचित्र का सफल और सार्थक प्रयोग कर सकता है।

परसाई जी ने जिन प्रमुख निबन्धों में रेखाचित्र का प्रयोग किया है उसमें प्रमुख है–

''हीनता का अतिराष्ट्रवाद'' स्वर्ग में नर्क, देसवासियों के नाम सन्देश, सत्य साधक मण्डल, कबीर की बकरी 'आजादी की घास', ''सदाचार का ताबीज', 'भोलाराम का जीव', 'गाँधी जी का शाल' आदि प्रमुख है।

परसाई के निबन्धों में कई बार तो संस्मरण और रेखाचित्र साथ–साथ भी आये हैं–उनकी विशेषताएँ देखिए–

''रेखाचित्र में किसी भी ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया जाता है, जिसकी स्मृति हमें प्रायरू उद्वेलित करती है। जो व्यक्ति किन्हीं अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण हमारे ऊपर गहरी छाप छोड़ दें, 'हम उसी को रेखाचित्र प्रस्तुत करते हैं' तथा यहीं बात संस्मरण के सम्बन्ध में है रेखाचित्र साधारण से साधारण का भी हो सकता है।''

जैसे–''मैं समझ गया हजारों साल पहले ऊँची जातियों ने यह मान लिया था, जो कुछ भी हो समाज में उपलब्ध है, हमारा है। वंचित रहना ही नीची जातियों का धर्म है। प्रतिष्ठा, धन सब ऊँची जातियों का अधिकार है। स्कूल में मेरे साथ नाई का एक लड़का पढ़ता था। वह मुझसे ज्यादा होशियार था। मुझे गणित पढ़ाता था और नकल भी कराता था। वह आता तो कहता–हरिशंकर नमस्ते–मेरे चाचा ने उसे डाँटा–तू नाई होकर नमस्ते करता है। पा लगी किया कर उन्हें क्या पता कि अब श्रेष्ठ ब्राहम्ण के भतीजे को वह नाई पढ़ाता और नकल कराता है।''

इसके अलावा फैन्टेसी के सघन यथार्थवादी प्रयोग तथा पौराणिक मिथकों और लोककथाओं के सार्थक इस्तेमाल मैं परसाई जी जैसी सफलता शायद ही किसी अन्य लेखक मैं देखने को मिलें।

व्यक्तित्व अपनी चरित्रगत वर्गीय विशिष्टताओं के साथ रचना के भीतर आकार ग्रहण करती है, रचनाकार की व्यंग्यात्मक सामर्थ्य के माध्यम से पात्र बनती है।

परसाई का लेखन आत्यन्तिक सामान्यीकरण की पद्धति का शिकार नहीं होता और वे किसी मूलभूत समस्या के लिए उत्तरदायी तत्वों की सीधी पहचान कर लेते हैं, तथा जनसाधारण के बीच उन्हें इस तरह से अलग कर देते हैं कि सभी लोग उन तत्वों की राष्ट्रीय एकता विरोधी भूमिका से अवगत हो जाते हैं। आसाम और पंजाब की अलगाववादी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के पीछे इन दोनों तरह की राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विघटनकारी शक्तियों की भूमिका का पर्दाफाश इनकी लेखन कला की महत्वपूर्ण विशेषता है।

परसाई जी ने अपनी लेखन कला के माध्यम से सुचिन्तित वैज्ञानिक दृष्टिकोण ओर संस्कृति की राष्ट्रीय वैज्ञानिक धारणाओं को एक साथ उनकी सम्पूर्ण अन्तर क्रिया के सुनिश्चित परिणामों के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जहाँ सांस्कृतिक अन्तर्विरोधों के साथ ही उनकी ऐतिहासिक सामाजिक परिणति का तात्विक रूप भी हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

परसाई की लेखन कला

परसाई जी की रचनाओं में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक विसंगतियों का सम्पूर्ण लेखा जोखा है। इनके लेखन में पिछले तीस वर्ष के जीवन का विश्वसनीय आकलन उपलब्ध होता है। जहाँ एक और जनसाधारण से लेकर बड़े से बड़ा राजनैतिक नेता, प्रशासक, बुद्धिजीवि डॉक्टर, वकील, थानेदार, कूटनीतिज्ञ, प्रेमी, अवसरवादी, पदलोलुप राजनीतिज्ञ, पूंजीपति, धार्मिक अनाचार और धार्मिक छद्म के भीतर जकड़े हुए पण्डे, पुजारी, महात्मा, एक साथ मिल जायेंगे।

''परसाई का रचना क्षेत्र बहुत व्यापक है। यहाँ इस देश का सम्पूर्ण समवर्ती इतिहास वातावरण और सामाजिक एंव सांस्कृतिक परिवेश तो उपस्थिति है ही विश्व का प्रत्येक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाक्रम यानि सम्पूर्ण विश्व –स्थिति और उसके भीतर कार्यशील विभिन्न शक्तियों के घात–प्रतिघात भी मौजूद हैं, जहाँ वे विश्व की सम्पूर्ण मानवीय चेतना के साथ एकाकार हो जाते हैं।''

''शर्माजी के इस कथन में बालमुकुन्द गुप्त की जगह हरिशंकर परसाई का नाम लिख दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इन्होंने भी अपनी गद्य भाषा को बुनियादी जन कलात्मक स्वभाव की हिन्दी में स्थापना की है। जनता की छिपी हुई शक्ति को खोलना और इसी के लिए अपनी गद्य भाषा का चयन करना इनके लेखन की पहचान है। इनकी रचना का ढाँचा ओर सारवस्तु–दोनों एक–दूसरे से घुले हैं। दोनों की घुलनशीलता के परिणाम से ही उनकी कृतियाँ सुन्दर और कलापूर्ण हैं। तरह–तरह की उक्तियाँ, मुहावरे और लतीफें लोगों को कुरेदते है और हँसाते हैं। उन्हें पढ़ सुनकर आदमी हँसते–हँसते लोटपोट होता है, पर अचानक बेसुध होने से पूर्व दिमागी तौर पर चौकन्ना हो जाता है। प्यार से की गयी शल्य क्रिया परसाई जी की लेखन–कला का गुण है। पत्रकार की रात–दिन की सतर्कता उनकी आदत में हैं। वह उन्हें देश काल से निरन्तर जोड़ती है।''

असम्बद्ध और निरपेक्ष आदमी के लिए हर स्थिति सामान्य और खारिज योग्य होती है जबकि परसाई जैसे वैज्ञानिक चिन्तन के विश्वासी के लिए स्थितियों के भीतर दाँव पेच ओर गयात्मकताघ अर्थवान होती है।

निश्चित ही समकालीन हिन्दी व्यंग्य निबन्धकारों में परसाई जी शीर्षस्थ है। उनके व्यंग्य के पेनेपन में किसी विशेष गंध की वजह से ही निखार आता है। समकालीन व्यंग्यकारों में शीर्षस्थ है, क्योंकि उनका व्यंग्य देश के नक्शे पर व्याप्त कुरीतियों का पर्दाफाश करता और परिवर्तन का संदेश देता है। इनका लेखन सिर्फ देश की अधुनातन स्थितियों तथा विसंगतियों का पर्दाफाश ही नहीं करता, अपितु पाठक की मन चेतना को झकझोर कर परिस्थितियों में परिवर्तन के लिए उन्हें प्रेरित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 12 (1988)
2. सदाचार का ताबीज – हरिशंकर परसाई पृ. 11 (1967)
3. हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य–डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 200 (1978) 4. वहीं पृ. 200
4. पगडण्डियों का जमाना हरिशंकर परसाई पृ. 18 (1966)
5. विकलांग श्रद्धा का दौर – वहीं (कैफियत) पृ. 1
6. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 12 (1988)
7. हिन्दी के व्यंग्य निबन्ध – डॉ. आनन्द प्रकाश गौतम पृ. 96 (1990)
8. अपनी–अपनी बीमारी ह.श. प. पृ. 76 (1972)
9. हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 202 (1978)
10. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 19 (1988)
11. कहत कबीर – ह.श.प. पृ. 46 (1988)
12. अपनी–अपनी बीमारी – ह.श.प. – पृ. 31 (1972)
13. रानी नागफनी की कहानी – ह.श. प. पृ. 79 (1967)
14. हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी
15. शिकायत मुझे भी है – ह.श.प. पृ. 46 (1976)
16. कहत कबीर – ह.श.प. – पृ. 40 (1988)
17. शिकायत मुझे भी है – ह.श.प. पृ. 98 (1976)
18. विकलांग श्रद्धा का दौर ह.श.प. – (भूमिका)
19. वैष्णव की फिसलन ह.श.प. पृ. 10 (1982)
20. हिन्दी के व्यंग्य निबन्ध – डॉ. आनन्द प्रकाश गौतम पृ. 96 (1990)

21. कहत कबीर – ह.श.प. पृ. 47 (1988)
22. बेईमानी की परत ह.श.प. पृ. 51 (1965)
23. कहत कबीर – ह. श. प. पृ. 1 (1958)
24. पाखण्ड का आध्यात्म – ह.श.प. पृ. 104 (1982)
25. कहत कबीर – ह. श. प. पृ. 12 (1988)
26. भूत के पाँव पीछे ह.श.प. पृ. 158 (1961)
27. वैष्णव की फिसलन – ह.श.प. – पृ. 17 (1982)
28. हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी पृ. 204
29. साहित्यिक निबन्ध – राजनाथ शर्मा पृ. 575
30. परसाई रचनावली सं. कमला प्रसाद पृ. 4 भाग 3 (1985)
31. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान डा. बा. शे. तिवारी पृ. 79
32. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 25
33. गद्यावली भूमिका – डॉ. नरेन्द्र भानावत पृ. 13
34. परसाई रचनावली भाग 6 पृ. 371
35. पाखण्ड का अध्यात्म – ह.श.प. पृ. 89
36. साहित्यिक निबन्ध राजनाथ शर्मा पृ. 776
37. सदाचार का ताबीज – ह.श.प. पृ. 13
38. पाखण्ड का आध्यात्म ह.श. प. पृ. 8
39. साहित्यिक निबंध – राजनाथ शर्मा पृ. 780
40. पाखण्ड का आध्यात्म ह.श.प. पृ. 93
41. परसाई रचनावली भाग 4 पृ. 3

❖◆❖